ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 196-199

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

गीतांजलि श्री के कथा–साहित्य में नारी–जीवन

नीलम कुमारी

शोध अध्येत्री (पी–एच.डी.) हिन्दी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू (जम्मू & काश्मीर), भारत

Received- 24.06.2020, Revised- 26.06.2020, Accepted - 28.06.2020 E-mail: neelamkumari131284@gmail.com

सारांश : *एक स्त्री का समाज से प्रश्न है कि मैं कौन हूँ? मेरे अस्तित्व की क्या पहचान है? समाज का उत्तर था तुम एक स्त्री हो, तुम एक बहन हो, किसी की पत्नी हो, तुम एक माता हो। स्त्री ने यह सुनकर स्वयं को उसी रूप में ढाल लिया और अपना जीवन दूसरों के लिए समर्पित कर दिया। वह परिवार की इच्छापूर्ति करते–करते ऐसी हो गई मानो उसकी अपनी सभी इच्छाएँ मर गई हैं। परिवार ने भी उसकी उपस्थिति को अनदेखा किय। उसके अस्तित्व को पहचाना नहीं। सदियों से वह दबती चली गई। जिन्दगी के कई महत्वपूर्ण निर्णयों से उसे दूर रखा गया। पितृसत्तात्मक समाज में उसको केवल मर्यादा में रहने की हिदायत दी गई। लेकिन जब उसने अपने अस्तित्व की तलाश में निकलना चाहा तब उस पर अंकुश लगाने की कोशिश की गई। यदि हम अतीत पर नज़र डालें तो कई ऐसी स्त्रियां हैं जिन्हें पुरुषों के बनाए नीति नियमों के आगे झुकना पड़ा और अपने अस्तित्व को मिटाना पड़ा। परन्तु आज के आधुनिक युग में स्त्री की स्थिति में परिवर्तन आया है। हमारे समाज का दृष्टिकोण बदला है। नारी को पुरुष के समान अधिकार मिल रहे हैं। शिक्षा के समुचित विकास के कारण स्त्री शिक्षित हो रही है और उसने स्वयं को आर्थिक रूप से मजबूत किया है और अब उसे अपने अस्तित्व की पहचान के दरवाजे पर दस्तक देना शुरू कर दिया है, परन्तु इस सिक्के के दूसरे पहलू पर नज़र डाली जाए तो आज भी नारी रूढ़िवादी समाज से पूरी तरह मुक्त नहीं हुई है। कारण पुरुष सत्ता का डर उसके ह्रदय में गहराई तक जड़ कर गया है जिससे विद्रोह करने पर वह डरती है।*

कुंजीभूत शब्द– समर्पित, अस्तित्व, इच्छापूर्ति, मर्यादा, सदियों, अंकुश, मजबूत, विद्रोह, पितृसत्तात्मक,रूढ़िवादी ।

हिन्दी साहित्य के लेखक और लेखिकाओं ने स्त्री की स्थिति का मूल्यांकन किया और उसकी अस्मिता की तलाश के लिए वैचारिक आधार भूमि प्रदान की है। स्त्री लेखन के माध्यम से स्त्री के अंदर ही अंदर सदियों से हुई भावनाएं जो अंदर ही अंदर छटपटा रही थीं मुखरित हो रही हैं। नारी जीवन की व्यथा, संघर्ष, पीड़ा, विद्रोह को अपने लेखन के माध्यम से अभिव्यक्त किया। समकालीन महिला लेखिकाओं में गीतांजलि श्री एक जाना–माना नाम है। स्त्री होने के कारण लेखिका ने स्त्री की पीड़ा को समझा और अपने कथा–साहित्य के माध्यम से स्त्री जीवन के विभिन्न पक्षों को उकेरा है। इनके कथा–साहित्य के नारी पात्र अपने जीवन के संघर्षों से जूझते हैं लेकिन हार नहीं मानते। अपने जीवन को नए अर्थ देने के प्रयास में निरंतर संघर्ष करते हैं। जीवन से हारकर निराश नहीं बैठते और नई चेतना से सृजित होकर अपने लक्ष्य को पा लेते हैं।

गीतांजलि श्री का उपन्यास 'माई' में चित्रित माई नारी चेतना की सजीव मूर्ति हे। परंपरागत नारी के रूप में कर्त्तव्यो को निभाती है। घर के सभी सदस्यों की उचित देखभाल करती है। रूढ़िवादी ससुरालवालों की हर प्रताड़ना और जली–कटी बातें सुनती है परन्तु अपनी मर्यादा को नहीं तोड़ती उसकी चुप्पी ही उसका सबसे बड़ा हथियार है। उसकी यह चुप्पी उसके ह्रदय में उठती विद्रोह की भावना है जो घर वाले पहचान नहीं पाते। "माई की आग की बात तो कभी नहीं उसकी आग तो न बचपन, न जवानी न बुढ़ापे में देखी या जानी। उसने तो आग को भीतर खींचकर ऐसे छुपा लिया कि बाहर निकलती शीतलता में अंगारों का कोई आभास नहीं रह गया। उसकी आग का हम मान ही कर सके बस सोच पाए।"[1] पुरुषसत्तात्मक समाज में नारी स्वतन्त्र नहीं जहाँ कभी नारी के स्वतन्त्र इच्छा रूपी पर परवाज़ के लिए खुले भी हैं तो समाज ने आंखे तरेरी हैं। इनके बीच स्त्री कुंठित संकीर्णता में घुटती, संदेहों से बिंधी आर्थिक दबावों से टूटती पूर्वाग्रहों के दंशों से लहुलुहान है। जब कभी नारी ने विद्रोह किया तो समाज के पंडितजनों ने कहा कि औरत भटक गई। औरत औरत नहीं रहीं।"[2] प्राइवेट लाइफ कहानी की नायिका एक पढ़ी लिखी आजाद ख्याल वाली युवती है और उसकी स्वच्छंद जीवनशैली है लेकिन उसके चाचा–चाची इसका विरोध करते हैं "तुम कितनी अच्छी तरह करोगी वह तो मैं देख रहा हूँ ... खानदान की आबरु से खिलवाड़ कर रही हो .. हमारे समाज में लड़की बहुत बड़ी हस्ती होती है ... देवी

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

होती है। उसकी इज्जत हल्की फुलकी नहीं होती। ... बहुत संभलकर चलना होता है। हर कदम फूंककर रखना पड़ता है ... लड़की के पलक झपकने का भी मतलब लगाया जाता है। ... इज्जत सबसे मूल्यवान वस्तु है।"[3] नारी भी अन्य मानव प्राणियों की तरह स्वतंत्र और स्वागत जीव है लेकिन जिस पुरुषसत्तात्मक समाज में वह रहती है वह नारी की अतिक्रमण की क्षमता को कुंद करके उसको हमेशा के लिए अंतवर्ती अवस्था में रख देना चाहता है। 'प्राइवेट लाइफ' कहानी में नायिका अकेली किराए के मकान में रहती है। घर वाले एतराज़ करते हुए कहते हैं, "अलग अकेले रहने की क्या जरूरत पड़ गई? होस्टल में कौन–सी कमी है? हर सहूलियत है, इज्जत है, सुरक्षा है, कोई देखनेवाला है ..। यह जरूरी होता है, हमारे समाज में ... लड़की हमेशा किसी की निगरानी में रहती है। पहले बाप, फिर पति, फिर बेटा उसकी देखभाल करता है।"[4]

स्त्री का अपने अस्तित्व व अपनी सत्ता के लिए सचेत होना नारी चेतना है। यह केवल वर्गीय मानसिकता नहीं बल्कि समाज के थोथे मूल्यों पर बलिदान हो रहे व्यक्ति के स्वतंत्र अस्तित्व को पहचानने और व्यवस्था के परिवर्तन को मूल्यांकित करने की बेचैनी है। 'माई' उपन्यास में सुबौध और सुनैना माई को डयोढ़ी की पितृसत्ता के घेरे से निकालने का हर संभव प्रयास करते हैं लेकिन वह यह नहीं जानते कि आई जलती रही अंदर खींचकर आग को। पर समझे माई की भी आग थी खोखल आग नहीं थी। जिसका दूसरों के लिए जलना हमने देखा था पर जिसका अपना जलना अपने लिए नहीं देखा था।"[5]

'प्राइवेट लाइफ' कहानी की नारी पात्र अपने अस्तित्व के लिए जागृत है। घरवालों के चाचा–चाची का आक्रामक व्यवहार उसके खुद की पहचान को चूर–चूर कर देता है। उसे अपनी और माँ की स्थिति में कोई फर्क नहीं दिखाई देता। "उसे मालूम था वह कम बोलना और कम नज़र आना, जो लड़की की इज्ज़त बनाता है। उसके बचपन में वे उसे भी और माँ को भी निरंतर सुनाते थे – "ऐसे रहो कि किसी को पता न चले कि घर में कोई है और वह इसका पलटवार करती हुई कहती है कि जिसे आप इज्ज़त समझते हैं उसे मैं सबसे बड़ी बेइज्ज़ती मानती हूँ।"[6] भारतीय नारी को शुरू से ही इसी शिक्षा के साथ बड़े किया जाता है कि पुरुष नारी का रक्षक है। नारी को पुरुष (पति) की आज्ञा का पालन करना चाहिए और कर्तव्यनिष्ठ बनकर रहना चाहिए। 'तिरोहित' उपन्यास में चच्चो का पति उम्र भर चच्चों की अवहेलना करता है लेकिन जब वह कोमा में चला जाता है तब समाज चच्चो को पति की सेवा करने को कहता है जैसे सावित्री की कर्तव्यनिष्ठा से सत्यवान को जीवित कर दिया था। "रोना मत बहनजी। यह तुम्हारा प्रताप है कि तुम सधवा हो जैसा भी हो पति साथ है तुम्हारे ... कितना कठिन इम्तहान है पर बहनजी आप अब भी कर ले जाएंगी, आपकी जैसी ताकत और निष्ठा आज भी अपशकुन टाल देगी। ... आप ही को सब कुछ करना है लोग इस तरह बताने लगे कि जैसे दुष्कर कार्य हल हो गया। इन्हें आपकी सेवा लौटा लाएगी। अपने को भूल जाइए। इन्हें एक पल भी अकेला मत छोड़िए अब। किसी के भरोसे बिलकुल नहीं। आप सीधी हैं, विश्वास करती हैं ज़माना धूर्त है, खुदगर्ज़ है। बस आप हैं इनके लिए।"[7]

पुरुष चाहे जितना खुले और स्वतंत्र सोच का दंभ भरे लेकिन स्त्री के पक्ष में आज भी उसकी संकीर्ण विवचारधारा है। 'दूसरा' कहानी में भगीरथ और नीलम पति–पत्नी हैं। भगीरथ एक उद्योगपति है और नीलम लेखिका है। भगीरथ नीलम की बढ़ती लोकप्रियता और उसकी बिंदास जीवनशैली से खिंचा–खिंचा रहता है। "हद होती है जिन्दादिली जिताने की भी। साड़ी का पल्ला कैसे मजे में एक तरफ ढलक गया है। कमर एकदम खुली हुई है। ... यह एक आधुनिक औरतें जो बदन से बेखबर होना ही आधुनिकता समझती हैं।। जब हो जहाँ हो। हाथ पसार के बैठ जाएँ।"[8]

वहीं 'तिरोहित' उपन्यास में चाचा जी का विदेशों में अपना बिजनेस है। लेकिन वह अपनी पत्नी को घर की चार दिवारी के भीतर ही रखना चाहते हैं यहाँ तक कि पत्नी घर की खिड़की के पास खड़े होने पर एतराज़ है।

"खिड़की पर तो नही खड़ी होती?
छत पर ...? नहीं तो।
रात उठी थीं ...? नहीं तो।
बिस्तर तो खाली था ...? नहीं तो।"[9]

आज की नारी जागृत है उसके अपने अस्तित्व, अस्मिता, सम्मान के प्रश्न नये नहीं हैं किन्तु उनकी अनुगूँज अभी तक नयी है। नारी ने अपने पक्ष में खुद खड़ा होना सीखा है। अपने सवाल भी खुद उठना सीखा है। नयी परिस्थितियों में पुराने सवाल नये ढंग से उठाए गए हैं। 'माई' उपन्यास के संदर्भ में सुनैना माई की तरह झुकना नहीं चाहती। माई सुनैना को इसी रूप में ढालने का प्रयास करती है – "आप ही झुक जाती हूँ उस अथाह कमज़ोरी के आगे, जिसने मुझ ताकतवर को आड़ दी। मेरी बेडियाँ खुलने दी, आग लहकने दी, गति आने दी, उसकी अथाह कमज़ोरी ने ही लड़ा दिया।"[10] वही 'प्राइवेट लाइफ' की नारी आत्मसजग है अपने स्वतंत्रपूर्वक जीवन में किसी का भी हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं है। "मैं अपने ढंग से जीना ठीक समझती हूँ आप समझ सकते हैं तो यहाँ रहिए। जबरदस्ती तो मैं समझा नहीं सकती। मैंने तो यही

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

चाहा था कि आप भी मेरे जीवन में शरीक हों ... पर मेरी बेइज्जती करने के लिए नहीं ... मेरे व्यक्तित्व की ... मेरी प्राइवेट लाइफ की ... आपको कद्र करनी पड़ेगी। आपको अच्छा नहीं लगता तो चले जाइए ...। यू कैन गेट आउट।"[11]

स्त्री होने के कारण स्त्री को समाज की नज़रों का सामना करने से भी डर लगता है। स्त्री होना मानो उसके लिए अभिशाप है। यहाँ तक कि उसे अपना शरीर दुश्मन लगने लगता है। 'प्राइवेट लाइफ' की नारी को अपनी बचपन की घटना याद आ जाती है जब उसका बड़े होने पर घरवाले उस पर हर तरह से समाज से छिपाने लगे थे। उसे लगा माना कि उसका शरीर आफत की जड़ है। "वह शर्म से सिमटी चली गई थी। जितना ही उसका बदन बढ़ा था उतनी ही वह सिकुड़ गई थी। उसका सारा अस्तित्व उसके उन उभरते गोलों म्रें जाकर समा गया था। उसकी सारी चेतना उसके जीवन भर की चेष्टा गोलों को छिपाने में लग गई।"[12]

नारी की स्थिति पितृसत्ता में बेचारी भर की है। वह आँख मूँद कर पुरुष के हाथों की कठपुतली बनी रहती है। और पुरुष की हर प्रताड़ना को सहती है। 'अरे गोपीनाथ' कहानी का गोपीनाथ स्त्री की पुरुषों के दुर्व्यवहार सहने की आदत को लेकर दुःखी है। अपने सामने किसी स्त्री को पुरुष के हाथों पिटते देख वह कहता है कि देखने की बात तो यह है कि क्यों औरत पिटना सहज मानती है और लड़ना बचना शर्मनाक है। कौन सी घबराहट है कि पढ़ी–लिखी औरत की पति की क्रूरता सहने में वह अपमान नहीं समझती जो उससे लड़कर अलग होने में देखती है। उसकी यह मानसिकता ही उसे ले डूबती है। बाहर वाला एक बार बचाएगा बार–बार तो नहीं और वह फिर उसी तरह अपमानित होती रहेगी।"[13]

आज वह अपने अधिकारों और अस्तित्व के बारें में सोच रही है जिसे पुरुषों ने उसे छीन लिया है। 'बेल–पत्र' कहानी की फातिमा और ओम ने अर्न्तधर्मीय विवाह किया है। फातिमा को लगता है कि दूसरे धर्म में विवाह करने के कारण उसने अपनी पहचान को खो दिया है और ओम उस पर अपना धर्म थोपकर उसकी पहचान छीन रहा है। "उसे लगा कोई पहचानता नहीं है। मानता नहीं है या तो बस बर्दाश्त करता है या फिर जलील करता है उसे अपनी अस्मिता की खोज हो आई।"[14]

भारतीय नारी जितना स्वाधिकार का दम भरे और अस्मिता की रक्षा का संकल्प करे, वह सामंजस्य त्याग प्रेम की भावना को त्याग नहीं पाती। पुरुष सदा से अहंवादी और नारी उसके अहं को सहन कर गृहस्थ को चलाती रही है। जब सुबोध और सुनैना माई (माँ) को उनके अधिकारों के बारे में बताते हैं तो माई इन सबसे अलग छिटक जाती। जब कभी बच्चे माई की खातिर पिता को गलत ठहराते तो माई पति का पक्ष ले लेती। माई ने बहुत धोखे दिए थे। बार–बार लड़ाई में कमज़ोर पड़ी थी। हमारी आड़ में खड़ी होती, हम लड़ते जाते अचानक देखते कि जिससे लड़ रहे हैं उसी के पास माई खड़ी है। सकपका के पीछे मुड़ते, माई ने दल बदल दिया है।"[15]

औरत अगर पढी–लिखी है कामकाजी है तो उससे समाज और परिवार की उम्मीद अधिक होती है। लोग चाहते हैं कि वह सारी भूमिकाओं को बिना किसी गिला–शिकवा के निभाए। वह कमा कर भी लाए और घर–गृहस्थी को भी संभाले और बच्चों का भरण–पोषण भी करे और सास–ससुर की सेवा भी करे। 'तिनके' कहानी की चन्दा एक पढ़ी लिखी आधुनिक स्त्री है जो किसी कॉलेज में लेक्चरर है। चन्दा की दीदी को चन्दा का घर के काम की तरफ पूरा ध्यान न दे पाने पर शिकायत है "तुम्हारी टीचिंग तेा मटरगश्ती है। कभी दो घंटे में हो गई। कभी तीन में और वापस घर आकर पसर जाओ। मटक–मटककर गई।"[16]

"... मैं तो कहती हूँ, हर तरफ से मजे लूटना चाहती है यह नए ख्यालवाली नारियाँ। पढ़ने–लिखने में दिलचस्पी है नहीं तुर्रा यह है कि घर का काम पढ़ने नहीं देता।"[17]

आज नारी में व्यक्तित्व की स्वतन्त्र सत्ता स्थापित करने की छटपटाहट है। 'माई' उपन्यास की सुनैना माई के रूप में अपने आपको साकार करती है। माई जिसने उम्र भर केवल सहा लेकिन कभी किसी से कुछ नहीं कहा। सुनैना माई की आवाज़ बनती है जो माई के बचपन का विद्रोही रूप था। "मैं नहीं समझा पा रही थी सुबोध को कि मेरे अंदर बाहर अब धुँआं–धुआं हो रहा था पर यही तो असल था यह तो धुँआं था अन्दर बाहर फैला हुआ था जिसमें अनगिनत रिश्तों की मिली जुली ललक और घुटन थी जिनका माधुर्य मुझे साँस खींचने को मजबूर करता है।"[18]

अब जागना तो नारी को स्वयं होना वरना उसकी चीखें ही सुनाई देती रहेंगी। समाज तो स्त्री को चीखने का अधिकार देता है परन्तु निर्णय लेने का अधिकार आज तक उसके पास नहीं। न्याय की बधिरता उसे सुनेंगे नहीं, अंधी आँखें दुलर्भतम में दुर्लभ तलाशती रहेंगी, उसका गूँगापन सत्ता और शक्ति या दबाव में गहराता जाएगा। "हमारी तो हमेशा से धुन थी कि माई को माई नहीं रहने देंगे। हमारे तजुर्बे ने गहरे चिंतन ने भरी–पूरी सोच समझ ने हमें सिखा दिया था कि माई एक खोखल है, क्योंकि समाज उसे खोखल बना के अपने हित के लिए रखे हुए था उसमें

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

इंसान हम भरेंगे उसे पनपने का मौका हम देंगे ताकि सदियों से जुल्म सहता वह खोखल सरक जाए और माई माई नहीं होकर भरपूर लहलहाए।"[19]

अब वह समय आ गया है कि स्त्री कानून को बैसाखियों के रूप में इस्तेमाल न करे जैसा अरविंद जैन ने स्त्री विषयक कहा है कि स्त्री के अधिकार ही उसका हथियार है। पितृसतात्मक समाज में स्त्री को केवल झुकना ही सिखाया है। 'माई' उपन्यास के संदर्भ में "हरदम झुकनेवालों का यही हश्र होता है ... माई हमेशा झुकी रहती थी। एक मौन झुकी हुई साया सी इधर–उधर फिरती।"[20]

सुबोध और सुनैना माई के झुकने को बुरा मानते हैं। कैसे पहुँचे माई तक? कैसे उसे पाकर यहाँ से निकाल लाए और किसी तरह बच बचाकर जो चिंदियां निकाल लाएँगे, क्या यह वाकई माई की होंगी?"[21]

यह प्रश्न सुबोध और सुनैना का अपने आप से है कि क्या स्त्री की स्थिति में कोई सुधार की आशा है। लेखिका ने माई के माध्यम से अपने आप को और अपने माध यम से माई को समझने की कथा कही है जो हर मध यमवर्गीय परिवार की स्त्री की कथा है। माई गड्ड–मड्ड स्मृयिों के सहारे जुटाए संकेतों में कही अनकही कहानी का सिर्फ आभास देती है। इस उपन्यास में लेखिका ने कई सवाल उठाए हैं। सुनैना का कहना है – "मुझे माई नहीं बनना मैं माई वैसे भी नहीं बनूँगी, मैं चाहूँ तो कभी माई नहीं बन सकती।"[22]

निष्कर्ष रूप से हम यही कह सकते हैं कि स्त्री और पुरुष के सहचर्य को दो अधूरों का सह अस्तित्व मानने के बजाए विचारों और सह अनुभूतियों की सहयाना आदि मान लिया जाए तो स्त्री जान जाएगी कि वह पुरुष की पूरक ही नहीं उसकी अपनी स्वतंत्र पहचान है। समाजनिरर्थक रवैये की उपेक्षा और अपनी महत्वकांक्षा को पूरा करने का संकल्प उसे अपने होने का अर्थ सौंपेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. माई उपन्यास, गीतांजलि श्री, पृ. 49
2. स्त्री उपेक्षिता, सीमोन दा वाउवार, प्रस्तुति प्रभा खेतान, पृ. 21
3. प्राइवेट लाइफ, गीतंजलि श्री, अनुगूंज (कहानी संग्रह), पृ. 10, 11
4. वही, पृ. 10
5. माई उपन्यास, गीतांजलि श्री, पृ. 167
6. प्राइवेट लाइफ, गीतांजलि श्री, अनुगूंज (कहानी संग्रह), पृ. 10
7. तिरोहित उपन्यास, गीतांजलि श्री, पृ. 118–119
8. दूसरा, गीतांजलि श्री, अनुगूंज (कहानी संग्रह), पृ. 98
9. तिरोहित उपन्यास, गीतांजलि श्री, पृ. 53
10. माई उपन्यास, गीतांजलि श्री, पृ. 64
11. प्राइवेट लाइफ, गीतंजलि श्री, अनुगूंज (कहानी संग्रह), पृ. 11
12. वही, पृ. 11
13. अरे गोपीनाथ, गीतंजलि श्री, वैराग्य (कहानी संग्रह), पृ. 105
14. बेल पत्र, गीतंजलि श्री, अनुगूंज (कहानी संग्रह), पृ. 20
15. माई उपन्यास, गीतांजलि श्री, पृ. 126
16. तिनके, गीतंजलि श्री, अनुगूँज (कहानी संग्रह), पृ. 50
17. वही, पृ. 55
18. माई उपन्यास, गीतांजलि श्री, पृ. 168
19. वही, पृ. 153
20. वही, पृ. 9
21. वही, पृ. 11
22. वही, पृ. 64

*****